RNI No. TELHIN/2014/59847

'हिन्दी दिवस' 2016 के अवसर पर आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी, हैदराबाद में
'भारतीय भाषाओं के संदर्भ में हिन्दी की प्रासंगिकता'
नामक विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला के अवसर पर

क्रमशः (दायीं ओर से) मुख्य अतिथि प्रो. ऋषभ देव शर्मा, अध्यक्षीय भाषण देते हुए अकादमी के निदेशक डॉ. पी. सत्ति रेड्डी, प्रमुख वक्त प्रो. एम. वेंकटेश्वर, सभा के संचालक श्रीमती पी. उज्ज्वला वाणी।

ISSN No. 2348-6163

साहित्य-सेतु

अक्तूबर-दिसंबर, 2016

प्रकाशक
आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी

संपादकीय कार्यालय :-
आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी
8 वी मंज़िल, वेस्ट विंग,
गगन विहार(गांधी भवन के सामने),
एम.जे.रोड, नामपल्ली,
हैदराबाद - 500 001. (आं.प्र.)
फोन:040-2465 4849

साहित्य-सेतु (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति-नीति अथवा लेखकों के विचारों से आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी अथवा संपादक-मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।
- साहित्य-सेतु से संबंधित सभी विवादास्पद मामले सिर्फ हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।

शुल्क भेजने तथा 'साहित्य-सेतु' मंगवाने का पता:
(मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट 'आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी' के नाम)
निदेशक
आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी
8 वी मंज़िल, वेस्ट विंग,
गगन विहार(गांधी भवन के सामने),
एम.जे.रोड, नामपल्ली,
हैदराबाद - 500 001. (आं.प्र.)
फोन: 040-2465 4849
Email:aphindiacademy@yahoo.com
Web:www.aphindiacademy.org

वार्षिक : ₹ 150/- आजीवन : ₹ 1500/- (व्यक्तिगत)
संस्थाओं के लिए : वार्षिक: ₹ 500/-; आजीवन : ₹ 2000/-

आवरण :
श्री नरेन्द्र राय 'नरेन'

मुद्रक :
रैतुनेस्तम प्रेस, रेडहिल्स, नामपल्ली, हैदराबाद-500004 फोन : 040-65345979

Printed by Dr.P. Sathi Reddy, Director, Andhra Pradesh Hindi Academy, Hyderabad Published by Dr. P. Sathi Reddy, Director on behalf of Andhra Pradesh Hindi Academy, Hyderabad and Printed at Raitu Nestham Press, # 11-6-657, Red Hills, Nampally, Hyderabad - 500 001., Ph : 040-65345979 and Published at Andhra Pradesh Hindi Academy, R/o Gagan Vihar, 8th Floor, West Wing, Nampally, Dist. Hyderabad - 500 001.

विषय-क्रम

पृ. सं.

5 **संपादकीय** - *बोनालू*

आलेख

8 **डॉ. एम.वेंकटेश्वर** - *भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका*

17 **डॉ. सुरेश उजाला** - *जल-प्रदूषण : समस्या और समाधान*

20 **सीताराम गुप्ता** - *आंदोलन अथवा कानून से नहीं, हिन्दी के भरपूर व सही प्रयोग द्वारा संभव है हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित करना*

25 **सुभद्रा कुमारी सिन्हा** - *भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी कविता और किसान जीवन*

31 **सियाराम** - *दलित-पत्रकारिता की पृष्ठभूमि*

37 **नागेन्द्र प्रसाद सिंह पटेल** - *भारतीय पुनर्जागरण का आत्मसंघर्ष*

47 **डॉ. क़लंदर बाषा.शेक** - *देशभक्ति व आधुनिक शिक्षा के अमर प्रतीक : मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद'*

51 **गोपिरेड्डी लीलावती** - *हैदराबादी हिन्दी साहित्यकार - डॉ. एन.पी.कुट्टन पिल्लै का व्यक्तित्व एवं कृतित्व*

56 **डॉ. दोड्डा शेषु बाबु** - *तेलंगाना का लोक नाटक 'चिंदु भागवतम': एक विश्लेषणात्मक अध्ययन*

61 **सपना मिश्रा** - *फाइटर की डायरी : स्त्री संघर्ष का मिथ और यथार्थ*

तेलुगु-साहित्य

65 **डॉ. एम.आंजनेयुलु** - *प्राचीन तेलुगु साहित्य में राम-काव्य*

यात्रा-साहित्य

70 **डॉ.जे.आत्माराम** - *अज्ञेय की सांस्कृतिक - दृष्टि और 'अरे यायावर रहेगा याद'*

कविता-विमर्श

76 **डॉ. एम.गोपी** - *'मीरा मुक्ति की साधिका - मीराकांत*

कविता

80 **देवेन्द्र कुमार मिश्रा** - *''कब्जा''*

रूप में मिली बंटवारे से उन्हें कितना दुःख हुआ है? और वे कितनी मानसिक पीड़ा-वेदना से गुज़रे हैं? आदि बातों को उन्होंने अपनी दैनिकियों (डायरियों) में अंकित किए हुए हैं। भारत में बसजाने के उनके निर्णय से प्रसन्न कांग्रेस दल आपकी संघर्षशीलता व सेवाओं पर ध्यान देते हुए आज़ाद या स्वतंत्र भारत के केंद्र सरकार में शिक्षा मंत्री का पद सौंप दिया था। वे इस रूप में 'भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री' बन गए थे। वे जवाहरलाल नेहरू जी के कैबिनेट में अपनी अंतिम साँस तक इस पद पर रहकर देश की शिक्षा व संस्कृति प्रसार के लिए आवश्यक अनेक योजनाओं तथा नीतियों का दिशा निर्देश किए थे। मौलाना आज़ाद सन् 1958 ई. फरवरी 22 को आसमान का तारा बन गए थे।

भारत के आज़ादी-संघर्ष और आज़ाद भारत के लिए की गई अनेक सेवाओं के मद्देनजर भारत सरकार ने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की मृत्यु के चौंतीस वर्षों के उपरांत 'भारत रत्न' पुरस्कार से सन् 1992 ई. में सम्मानित किया है। उर्दू भाषा-साहित्य के लिए आपकी सेवाओं को स्मरण करते हुए सन् 2004 ई. में 'मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय' (मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी) उस समय के आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद (यह फिलहाल तेलंगाणा राज्य में स्थित है) में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है और आंध्र प्रदेश सरकार आपके जन्म दिवस को 'अल्प संख्यक कल्याण दिवस' (Minorities Welfare Day) के रूप में राज्य भर में मनाने लगी है। इसके अलावा केंद्र सरकार ने मुसलमान उच्च शिक्षार्थियों के लिए 'मौलाना आज़ाद छात्रवृत्तियों' को भी वितरित करने की घोषणा की है। इसके साथ ही आपके जन्म दिवस को 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है।

सन् 2013 ई. मौलाना आजाद के 125 वें जन्म दिवस के अवसर पर केंद्र सरकार के द्वारा 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.मौलानाआजादहेरिटेज.ओआरजी (www.maulanaazad heritage.org) पोर्टल को प्रारंभ किया गया है, जिसके द्वारा मौलाना आज़ाद के जीवन की मुख्य घटनाओं का ब्यौरा पाया जा सकता है। केंद्र सरकार के द्वारा चलाया जाने वाला यह दूसरा पोर्टल है। महात्मा गाँधी जी के बाद यह सम्मान मौलाना आज़ाद जी को ही मिला है।

इस्लाम धर्म के पाँच उसूलों या नियमों में से एक है मक्का के 'काबा' का दर्शन तथा भ्रमण। ऐसे पवित्र मक्का में जन्म लेकर भी हिंदुस्तान में बसकर धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आधुनिक काल व समाज के अनुरूप आज़ादी के महत्त्व को पहचानते हुए उसके अनुसार ही भारत की आज़ादी के लिए त्रिकरण शुद्धि से लगे रहकर, वैयक्तिक आनंद व खुशियों को त्याग कर भारत देशवासियों को दासता की दुर्गति से मुक्त करने के लिए अपने ज्ञान व धन को राष्ट्रीय आंदोलनों में झोंक कर देशप्रेम-देशभक्ति व आधुनिक शिक्षा के अमर प्रतीक बन गए हैं मौलाना आज़ाद।

एक मुसलमान के रूप में 'मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' का व्यक्तित्व आज के भारत ही नहीं किंवा पूरे विश्व के युवा वर्ग के लिए निस्संकोच मार्गदर्शक बना हुआ है। आपके आदर्शोन्मुख जीवन का आचरण करना ही आपके लिए सच्चा श्रद्धार्पण' माना जाएगा।

* * *

संपर्क-सूत्र *:- अध्यक्ष व सहायक आचार्य, हिन्दी-विभाग, शासकीय महाविद्यालय, महबूबाबाद-506101. वरंगल (जिला), तेलंगाणा. मो: 09642139931*

हैदराबादी हिन्दी साहित्यकार - डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- गोपिरेड्डी लीलावती

भारत वर्ष के हिन्दी साहित्यकारों में से जन्मतः केरलीय संप्रदायी डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लैजी का विशिष्ट स्थान है, जिन्होंने बड़ी निष्ठा तथा लगन के साथ हिन्दी लेखन के द्वारा साहित्य प्रेमियों के तथा शिक्षार्थियों की शंकाओं को दूर करने हेतु अपना कर्तव्य निभाते हुए प्रखर भाषाशास्त्री, समीक्षक, वैयाकरण, कोशकार, निबन्धकार तथा अनुवादक के रूपों में अपना अमिट छाप अंकित किया है।

केरल राज्य के 'तट्टयिल' नामक गाँव के एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में दि.29-08-1935 को कुट्टन पिल्लै जी का जन्म हुआ। इनके पिताजी का नाम आर.पद्मनाभ पिल्लै तथा माता का नाम लक्ष्मी अम्मा था। पिल्लै के साथ चार भाई और दो बहन हैं। इनका पूरा नाम 'नडुवत्तर किज केतिल पद्मनाभ कुट्टन पिल्लै' है। जिसमें 'पद्मनाभ' उनके पिताजी का नाम है ऐसा नाम के साथ जोड़ना मलयाली संप्रदाय है।

शिक्षा :- प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय ईसाई-फादरी, एन.एस.एस.हाईस्कूल, तट्टयिल में संपन्न हुई। वे एक मलयाली भाषी होते हुए उन्हें हिन्दी भाषा से लगाव होने के कारण को एक भेंटवार्ता में बताया है – उन्हीं के शब्दों में ''मैं ने सन् 1945 ई. में अपनी दस वर्ष की अल्पायु में हिन्दी सीखना आरंभ किया था। सन् 1945 ई. के अप्रैल में हमारे गाँव के देवी मंदिर में 'मीन भरणी' नामक त्यौहार मनाया जा रहा था। सायंकाल एक कार्यकर्ता ने माइक पर घोषणा की कि उत्तर भारत से आये एक संत रामायण के कुछ प्रसंग हमारे सामने हिन्दी में प्रस्तुत करने जा रहे हैं। घोषणा के साथ ही पूरा वातावरण शान्त हो गया। उस स्वामीजी ने अपना भाषण हिन्दी में दिया, जिसका मलयालम अनुवाद एक द्विभाषिये ने प्रस्तुत किया। स्वामीजी के उस भाषण का मुझ पर ऐसा कुछ अविस्मरणीय प्रभाव पड़ा कि मैंने तभी हिन्दी भाषा सीखने-समझने का संकल्प लिया। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी स्वयं शिक्षक' तथा 'बच्चों की किताब' मैंने डाक द्वारा मंगवायीं और स्कूल से छुट्टी मिलते ही सायंकाल एकान्त में बैठकर हिन्दी सीखता गया।''[1] वे स्कूली शिक्षा के साथ-साथ 1948 में हिन्दी की प्राथमिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। 1952 में वे 'हिन्दी विशारद' हो गये तथा 1953 में ट्रावंकोर विश्वविद्यालय की 'हिन्दी विद्वान' परीक्षा भी उत्तीर्ण हुए। इस प्रकार हिन्दी भाषा सीखने की रुचि को बढ़ाते हुए केरल के 'पंतलम' में 'नायार सर्विस सोसायटी' (एन.एस.एस) महाविद्यालय से बी.एस.सी. में गणित विषय लेकर स्नातक बने। इसी बीच में वे हिन्दी के प्रचारक बनकर केरल के गाँवों में हिन्दी शिक्षण करते रहे। तो इस दौरान में ही दक्षिण के प्रमुख हिन्दी आचार्य 'मोटूरि सत्यनारायण' (सांसद) के संपर्क में आये। उनके सुझाव

से ही वे 1956 से 1958 के अंतराल में 'आगरा' के 'अखिल भारतीय हिन्दी महाविद्यालय' में प्रवेश पाकर 'हिन्दी पारंगत' तथा 'हिन्दी शिक्षण कला प्रवीण' परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किये। उनके आगरा प्रवास काल में उन्हें डॉ. गुलाब राय, डॉ.रांगेय राघव आदि विद्वान व साहित्यकारों का सुयोग प्राप्त हुआ।

सन् 1967 में उस्मानिया विश्वविद्यालय (हैदराबाद) की बी.ओ.एल. (Bachelor of Oriental Language) तथा 1969 में एम.ओ.एल. में प्रवेश पाकर (Master of Oriental Language) दोनों परीक्षाओं में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त किया। एम.ओ.एल. में ही 'कविवर पंत का छायावादी व्यक्तित्व एवं कृतित्व' नामक लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया, जो 1970 में प्रकाशित हुई। एम.ओ.एल. के उपरान्त डॉ. श्रीराम शर्मा के निर्देशन में 'पंत काव्य में बिंब-योजना' शीर्षक विषय पर अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया। जिसके परीक्षक डॉ. नगेन्द्र और डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित थे। सन् 1974 में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई।

परिवार :- कुट्टन पिल्लै की पत्नी का नाम 'शान्ता' है जो केरल विश्वविद्यालय के स्नातक है। वे विवाह के पूर्व केरल के गाँव के हाईस्कूल की अध्यापिका रही। हैदराबाद पहुँचने के बाद S.B.I. बैंक में उच्चपद पर सेवारत रहीं। इनकी तीन संतान हैं, एक बेटा और दो बेटियाँ। बेटा, 'डॉ. श्रीकुमार', आगरा विश्वविद्यालय के लिंगविस्टिक्स विभाग में कार्यरत है। बहू श्रीमती सीतालक्ष्मी, इंजनियर है। बड़ी बेटी 'श्रीदेवी' भी हिन्दी में एम.ए. की। स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा तथा पत्रकाररिता में डिप्लोमा प्राप्त करके एक दैनिक समाचार पत्र में कार्योन्मुख है तो छोटी बेटी 'सुधा' एम.ए., (अंग्रेज़ी) तथा सी.ए.आई.आई.बी. उत्तीर्ण होकर, बैंक में कार्य कर रही है।

हैदराबाद के निवासी :- हिन्दी प्रेस की नौकरी से आकृष्ट होकर पिल्लै जी आगरा से हैदराबाद पहुँचे किन्तु कुछ ही दिनों में प्रेस का काम छोड़कर शिक्षण संस्थाओं में सेवार्थी बने। हैदराबाद के गाँधीनगर मुहल्ले में S.B.I. कॉलोनी में उनका निवास स्थान है।

कार्य क्षेत्र :- हैदराबाद पहुँचने के पश्चात् पिल्लै जी ने केरल सरकार के सांख्यकी विभाग में कार्यरत थे, बाद में वे शिक्षण संस्थाओं के कई पदों पर कार्यान्वित रहे। यथा - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित हिन्दी महाविद्यालय एवं प्रचारक विद्यालय, मेथोडिस्ट बहुद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, संघी कॉलेज ऑफ कॉमर्स, प्राच्य महाविद्यालय, उस्मानिया विश्वविद्यालय (सायं स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा), मेथोडिस्ट डिग्री कॉलेज आदि हैं। डॉ. कुट्टन पिल्लै, मेथोडिस्ट डिग्री कॉलेज से सेवानिवृत्त हुए। उनका सेवा-काल 37 वर्ष का रहा (सन् 1958 से 1995 तक)।

साहित्य - सृजन :- उन्होंने अध्यापन के साथ-साथ हिन्दी के विभिन्न प्रकार के साहित्य का सृजन किया :-

आलोचना :- 1. प्रसाद और कामायनी (1959) 2. पंत - छायावादी व्यक्तित्व और कृतित्व (1970) 3. पंत- काव्य में बिम्ब - योजना (1974) 4. संत कबीर (1975) 5. अध्ययन और अनुसंधान (1975) 6. हमारे कलाकार (1976) 7. कैरली वैभव (1976) 8. केरल की संस्कृति (1979) 9. केरल - साहित्य और संस्कृति (1979) 10. काव्य - बिम्ब (1982) 11. छायावादी बिम्ब विधान और प्रसाद (1983) 12. अध्ययन और अनुशीलन (2000) 13. विचार और विवृत्ति (2001) 14. हमारे तीर्थ : पुराणों के झरोखे से (2002) 15. हमारे ऋषि - मुनि (2004) भाग-3 16. समीक्षालोक (2005) 17. विचार-वीथिका (2005)

समीक्षात्मक अध्ययन :- 1. निर्मला : एक अध्ययन (1963) 2. वरदान : एक अध्ययन (1963) 3. प्रतिज्ञा : एक अध्ययन (1964) 4. चेतन : एक अध्ययन (1964) 5.अधिकार का प्रश्न : अनुशीलन(1966) 6. हिन्दी साहित्य का सुगम इतिहास (1970) 7. हिन्दी साहित्य का इतिहास : पश्नोत्तरी (1973)

व्याकरण :- 1. तुलनात्मक व्याकरण (हिन्दी व मलयालम्) (1959) 2. सरल हिन्दी व्याकरण एवं रचना (1961) 3. भाषा प्रयोग (1998) 4. मिलिन्द हिन्दी (हिन्दी-अंग्रेजी) व्याकरण (2005)

कोश ग्रंथ :- हिन्दी पर्याय कोश (1977) 2. पौराणिक संदर्भ कोश (1984) 3. पौराणिक संदर्भ कोश - परिशिष्ट (1990), मिलिन्द पौराणिक संदर्भ कोश (परिवर्धित द्वितीय संस्करण) 4. बृहत् हिन्दी - हिन्दी - तेलुगु कोश (2006) 5. संक्षिप्त हिन्दी-हिन्दी - तेलुगु कोश (2006) 6. विद्यार्थी हिन्दी-हिन्दी - तेलुगु कोश (2006)

निबन्ध :- 1. प्रबन्ध प्रदीप (1963) 2. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध (1973) 3. पौराणिक आख्यान (1997)

जीवनी :- 1. स्वतंत्रता - सेनानी अल्लूरी सीतारामराजु (1991) 2. शबरिमला धर्मशास्ता स्वामी अय्यप्पन (2003)

अनुवाद :- 1. आध्यात्म रामायण 2.उत्तर रामायण - एक ही जिल्द में (1978) 3.धरती के संतुष्टतम लोग (अंग्रेजी से अनुदित)(1980) 4. दर्शन (काव्यानुवाद-1991) 5. कालम् - उपन्यास (1998) 6. धूपदान (कहानी-संग्रह)(1998) 7.अमृत वर्षा (कहानी-संग्रह-2001)
8. मलयालम् की प्रतिनिधि कहानियाँ (2005)

संपादन (मात्र प्रमुख रचनाएँ):- 1. दक्षिण में रामकथा (1974) 2.गद्य चंद्रिका (1976) 3. हिन्दी कुसुमाकर (1978) 4. नूतन कहानियाँ (1978) 5.हिन्दी काव्य परिमल (1978) 6. हिन्दी गद्य कुसुमाकर (1978) 7. तेलुगु साहित्य परिमल (1991) 8.हिन्दी रत्नाकर (1998) 9.महाकवि जी. शंकर कुरूप (2001) 10. दक्षिण का साहित्यिक सांस्कृतिक वैभव (2005)

पिल्लैजी के कुछ लेख व मौलिक रचनाएँ, हाईस्कूल, इंटरमीडियट तथा स्नातक के पाठ्यक्रम में निर्धारित किये गये, साथ ही स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में आपकी कुछ रचनाएँ संदर्भ ग्रंथों के रूप में निर्धारित हैं।

पत्रकारिता :- वे हैदराबाद 'केरल समाज' की पत्रिका 'निरपरा' (मलयालम भाषा) में तथा 'वाणी सरोवर', लखनऊ के संपादक सदस्य रहें। 'अग्रतारा' साहित्यिक पत्रिका के संपादक-मण्डल के एक विशिष्ट सदस्य रहे। लखनऊ की 'भुवनवाणी ट्रस्ट' की विद्वान परिषद के सदस्य रहे। डॉ. चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन ग्रंथ के संपादक मण्डल में कार्य किये, दक्षिण में 'रामकथा' तथा 'तेलुगु साहित्य परिमल' के भी संपादक रहे।

''हिन्दी तथा मलयालम की नाना विधाओं पर डॉ. पिल्लै सन् 1956 से लिखते आये हैं। केरल भारती, केरल ज्योति, हिन्दी प्रचार समाचार, अमर-जगत, राष्ट्र सेवक, स्वतंत्र भारत, आँन्ध्र प्रदेश पत्रिका एकान्त, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, अध्येय, हिमदूत, अभीक, प्रकाशित मन आदि पत्र-पत्रिकाओं में उनके अब तक 100 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं। .... मलयालम् की कहानियों के अनुवाद स्वतंत्र भारत में प्रकाशित कराते आये हैं।''[2] इन साहित्यिक विधाओं के सृजन के साथ-साथ उनके मलयालम साहित्य संबंधी कई भाषण, आकाशवाणी, (AIR) हैदराबाद केन्द्र से प्रसारित किए गए हैं। इसके अलावा 'दक्षिण समाचार' में उनका 'भाषा प्रयोग' स्तंभ बड़ी सावधानी से पढ़ा जाता था। जिसमें वे अपने व्याकरणिक टिप्पणियाँ प्रस्तुत करते थे।

दक्षिणांचलीय साहित्य समिति :- सन् 1972 में डॉ. भीमसेन निर्मल तथा डॉ. एन.पी.कुट्टन पिल्लै के नेतृत्व में आँन्ध्र प्रदेश के कुछ रचनाकारों की सहायता से 'दक्षिणांचलीय साहित्य समिति' नामक संस्था की स्थापना की गयी, जिसके अध्यक्ष निर्मल जी रहे तथा सचिव पिल्लै जी। संस्था का मुख्य उद्देश्य था - ''दक्षिण के सृजनशील हिन्दी लेखकों को प्रोत्साहन देना, उनकी रचनाओं के प्रकाशन तथा वितरण का प्रबंध करना तथा उन्हें अपनी रचनाओं पर अधिक से अधिक आर्थिक लाभ पहुँचाना। सरकारी या ग़ैर-सरकारी संस्थाओं से किसी भी प्रकार के आर्थिक अनुदान के अभाव में भी समिति ने सोलह ग्रंथ प्रकाशित किये हैं।''[3]

इन कार्यों को संपन्न करने के लिए कभी आँन्ध्रप्रदेश सरकार की छोटी-सी अनुदान-राशि प्राप्त होती तो कभी T.T.D. तिरुपति की सहायता मिलती। बाकी के ख़र्च, समिति को ही करना पड़ता था।

पुरस्कार एवं सम्मान :- डॉ. कुट्टन पिल्लै कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हुए हैं। पुरस्कार की सूची इस प्रकार हैं :-

1. भारत सरकार का पुरस्कार - 1978, 1984, 1991
2. उत्तर प्रदेश शासन का पुरस्कार - 1976
3. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का पुरस्कार - 1979, 1991, 1998
4. दक्षिण भारत हिन्दी प्रतिष्ठान का पुरस्कार - 1985
5. आँन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी - 1988 & 2008
6. केरल हिन्दी साहित्य अकादमी - 1991
7. हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा 'हीरक जयन्ती स्वर्ण पदक' - 1996

इनके साहित्यिक सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए 'अमेरिकन बयोग्राफिकल इंस्टिट्यूट' नामक संस्था ने इन्हें परामर्शदाता के रूप में सम्मानित स्थान प्रदान किया। 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान', आगरा द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में सन् 1965 तथा 1966 में उन्हें क्रमशः प्रथम व द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुए। 1969 में अखिल भारतीय 'सुलेख निबन्ध प्रतियोगिता' में भी उन्हें पुरस्कृत किया गया।

सन् 1966 ई. में 'सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ हयर एजुकेशन' नई दिल्ली ने 'विद्या भास्कर' उपाधि दिया है तो सन् 1977 ई. में 'साहित्य - कला - संस्कृति विद्यापीठ', मथुरा ने 'साहित्य मार्ताण्ड' की उपाधि से सम्मानित किया है। 14 सितंबर 2001 को बरेली, उत्तरप्रदेश के रोटरी 3110 ह्यूमेन वेल्फेयर सोसाइटी ने पिल्लै जी को 'रोटरी हिन्दी सेवा पुरस्कार तथा 'भारती सेवा - भूषण' उपाधि से विभूषित किया।

पुण्यतिथि :- सन् 2012 ई. में 17 जुलाई के दिन, दिल की बीमारी के कारण 12 बजे दुपहर को उन्होंने अपने देह का त्याग किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. कुट्टन पिल्लै : एक समर्पित व्यक्तित्व (भेंट वार्ता) - ओमप्रकाश द्विवेदी - सानुबंध, अक्तूबर - 1985.
2. समीक्षा क्षेत्र में उभरते नये हस्ताक्षर : डॉ. कुट्टन पिल्लै - मामचंद कौशिक - संपादक - अजंता साप्ताहिक 30 अप्रैल, 1976
3. डॉ. कुट्टन पिल्लै : एक समर्पित व्यक्तित्व (भेंट वार्ता) - ओमप्रकाश द्विवेदी - सानुबंध, अक्तूबर - 1985.

* * *

संपर्क-सूत्र:- असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग शासकीय महाविद्यालय, मंचिरियाल, जिला अदिलाबाद-504 208. मो:9052509777

''वाय हिन्द ! अफ़सोस ! ज़माना कैसा आया ।
जिसने करके सितम भाइयों को लड़ाया।
मुसलमान हिन्दुओं ! वही है कौमी दुश्मन,
जुदा जुदा जो करे फाड़कर चोली दामन ।''

- पं. रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण'